जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अगस्त ।। अंक–01 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

प्रिय पाठकों,

जीविका ने बिहार के 1 करोड़ से अधिक परिवारों को 10 लाख समूहों के साथ जोड़कर एक नया मानक स्थापित किया है। इस मानक को स्थापित करने में मुख्य भूमिका जीविका दीदियों, कैडरों, सामुदायिक संगठनों एवं कर्मियों की है। जीविका के इन कार्यों की जानकारी एवं उपलब्धियों को संकुल स्तर संघ तक पहुंचाने हेतु मासिक जीविका समाचार पत्रिका की शुरूआत की गयी है। इसके माध्यम से दीदियाँ एक दूसरे के बेहतर कार्यों से प्रेरणा लेंगी। कोरोना संक्रमण काल में भी बिहार की जनता और राज्य सरकार के कर्मी, सभी ने कोरोना वारियर्स के रूप में जीविका दीदियों के कार्यों को देखा। पत्रिका के प्रथम अंक में कोरोना काल में जीविका दीदियों के प्रयासों को प्रस्तुत किया गया है। हमारा यह प्रयास होगा कि इस पत्रिका को प्रत्येक संकुल संघ तक उपलब्ध करवाया जाए ताकि इसकी उपयोगिता एवं सार्थकता साबित हो सके।

समस्त जीविका परिवार को मेरी शुभकामनाएँ।

– बालामुरूगन डी.
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी

अन्दर के पृष्ठों में.....

रोल मॉडल बनी मुन्नी
(पृष्ठ – 02)

दीदी की रसोई
(पृष्ठ – 03)

प्रवासियों हेतु खुला रोजगार का द्वार
(पृष्ठ – 04)

जीविका दीदियों ने उछाला उम्मीदों का पत्थर और छुआ आसमान

''कौन कहता है कि आसमां में सुराख हो नहीं सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों''

जीविका दीदियों के लिए उक्त पंक्तियां सटीक बैठती हैं। कोरोना संकमण काल में जीविका दीदियों ने अपने प्रयासों और गतिविधियों से न सिर्फ समाज को कोरोना संकमण से बचने के लिए जागरूक किया, वरन् विभिन्न तरीकों से सेवा कार्य करते हुए समाज में कोरोना संक्रमण से उत्पन्न कठिनाइयों को कम करने में भी भूमिका निभा रही है। कोविड–19 के रोकथाम की लड़ाई में जीविका दीदियाँ बढ़–चढ़ कर भाग ले रही हैं। जीविका दीदियाँ विभिन्न स्तरों पर गतिविधियों का संचालन कर कोरोना के प्रति जहां आम लोगों को जागरूक कर रही हैं वहीं, मास्क निर्माण एवं निर्मित मास्क का वितरण कर प्रशासनिक महकमे एवं जनसमुदाय को सहायता प्रदान कर रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ी लाभार्थियों के बीच नकद राशि के वितरण से भी कोरोना के खिलाफ जंग में मदद मिल रही है। ग्राम संगठनों द्वारा खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के तहत विभिन्न खाद्य सामग्रियों का वितरण समूह सदस्यों के बीच किया जा रहा है। जीविका दीदियों द्वारा संचालित ग्राहक सेवा केन्द्र, दीदी की रसोई, किचेन गार्डेन आदि कार्यक्रमों द्वारा भी जरूरतमंद लोगों को मदद पहुंचाई जा रही है। दीदियों ने राशन कार्ड निर्माण में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। कृषि यंत्र बैंक से किसान दीदियों को काफी राहत मिली है। प्रवासियों को विभिन्न उद्यमों से जोड़ना, प्रवासी परिवारों को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ना, मनरेगा के कार्यों में मदद पहुंचाने जैसे कार्यों में भी जीविका दीदियाँ बढ़ चढ़कर कार्य कर रही है।

रोल मॉडल बनी मुन्नी

कोरोना वायरस से जंग में जीविका दीदियाँ अग्रणी भूमिका निभा रही है। इन्हीं कोरोना वारियर्स दीदियों में बक्सर जिले के ब्रहमपुर प्रखंड की श्रीमती मुन्नी देवी भी हैं। मुन्नी ने कोरोना संकमण की भयावह स्थिति के बीच आमजन को मास्क पहनने, सामाजिक दूरी का पालन करने, साफ–सफाई के लिए प्रेरित करने का काम किया। मुन्नी दीदी यहीं नहीं रूकीं, बल्कि उसने मास्क बनाने के लिए उन्नति जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ के सदस्यों को जागरूक भी किया। मास्क उत्पादन एवं उसके विपणन का भी बीड़ा उन्होंने उठाया। मुन्नी देवी मोपेड से मांग के अनुरूप घर–घर और विभिन्न विभागों में मास्क की सप्लाई कर रही हैं। मुन्नी देवी ने जीविका दीदियों को मास्क सिलना सिखाया। मांग के अनुरूप सुबह में मुन्नी खुद कपड़े की कटिंग करके जीविका दीदियों को उनके घरों पर दे देती है। चार–पांच घंटे बाद सभी दीदियों से मास्क एकत्रित करते हुए संकुल स्तरीय संघ के कार्यालय में आती हैं और वहां अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष की उपस्थिति में मास्क की पैकिंग कर अपने मोपेड से सप्लाई देने निकल पड़ती हैं। मास्क सप्लाई देने के समय भी वे लोगों को कोरोना संकमण से बचने का उपाय बताती हैं और प्रशासन के संदेशों का पालन करने के लिए भी लोगों को जागरूक करती हैं। उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की वजह से गाँव से लेकर प्रखंड कार्यालय तक के लोग मुन्नी को 'अब मास्क दीदी' के नाम से पुकारने लगे हैं।

पौधारोपण का संकल्प

आसमान से झमाझम बारिश एवं कोरोना संकमण की आशंका के बीच जीविका दीदियों का उत्साह कम होने का नाम नहीं ले रहा है। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए, चेहरे पर मास्क लगाकर दीदियां पौधा प्राप्त करने से लेकर अपने घर के आंगन या दरवाजे पर उसे लगाकर पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता जता रही हैं। सुपौल जिले के सदर प्रखंड अन्तर्गत एकमा पंचायत में पौधारोपण के कार्य को दीदियों ने आत्मबल एवं सार्थक प्रयास से शत–प्रतिशत पूरा किया। एकमा पंचायत स्थित प्रतिज्ञाा जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों ने पौधारोपण के अपने संकल्प को साकार करते हुए बड़े पैमाने पर आम, अमरूद, आंवला, कटहल, नींबू और मोहगनी के पौधे लगाए।

ग्राम संगठन की अध्यक्ष आरती देवी, सचिव फुलिया देवी और कोषाध्यक्ष सुनिता देवी के साथ–साथ जीविका के क्षेत्रीय समन्वयक रंजन कुमार द्वारा ग्राम संगठन की समस्त दीदियों को कुल 228 पौधे वितरित किया गया। इनमें से आम के 110, अमरूद, आंवला, कटहल और जामुन के 22–22 पौधे, नींबू के 19 और मोहगनी के 11 पौधे थे। प्रतिज्ञा ग्राम संगठन के अन्तर्गत कुल 169 जीविका दीदियों में से सभी दीदियों को पौधे वितरित किए गए। ग्राम संगठन की अध्यक्ष आरती देवी बताती है कि–'ग्राम संगठन की दीदियों को पौघारोपण की जरूरत एवं इसके फायदों के बारे में जागरूक किया गया है। साथ ही पौधों की रोपाई एवं उसकी उचित देखभाल के लिए उन्हें विभिन्न माध्यमों से प्रशिक्षित किया गया।' दीदियों के प्रयास से हरित बिहार का सपना पूरा होता दिख रहा है।

दीदी की रसोई

कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों के समुचित इलाज, सही देखभाल के साथ ही बाहर से आये हुए लोगों को कोरेंटाइन सेंटर पर शुद्ध एवं पौष्टिक नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती थी। राज्य सरकार के दिशा–निर्देश पर विभिन्न जिला प्रशासनों द्वारा जीविका दीदियों द्वारा संचालित 'दीदी की रसोई' को कोरेंटाइन सेंटर पर नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराने की जिम्मेवारी मिली। दीदियों ने खुद को संक्रमण से बचाते हुए कोरेंटाइन सेंटर पर रह रहे लोगों को घर जैसा नाश्ता एवं भोजन उपलब्ध कराया। दीदियों ने यह कार्य राज्य के चार जिलों वैशाली, बक्सर, पूर्णिया और शेखपुरा में सफलता पूर्वक संपादित किया। आवागमन एवं खुद को संकमण–मुक्त रखने जैसी समस्याओं का डटकर मुकाबला करते हुए जीविका दीदियों ने अप्रैल 2020 माह के प्रथम सप्ताह से कोरोंनटाइन सेंटर बंद होने तक चाय, नाश्ता और भोजन उपलब्ध कराया। दीदी की रसोई ने प्रशासन की इस बड़ी समस्या का समाधान कर दिया। कई जिलों में जीविका दीदियों ने कोरेंटाइन सेंटर पर भी जाकर भोजन बनाने की जिम्मेदारी का सफलता पूर्वक निर्वहण किया। बक्सर मे 'दीदी की रसोई' से जुड़ी प्रियंका गर्व से कहती हैं कि–'संकट की इस घड़ी में हम सबने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी समझा और कठिनाई का सामना कर रहे लोगों की यथा संभव मदद की। बांकी समाजिक कुरीतियों की तरह ही हम सब कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में भी अवश्य ही विजयी होंगी।

बाँस ने बदली जिंदगी

कटिहार जिले में बांस को लेकर कई नवाचार किए जा रहे हैं। इसका नतीजा वह है कि कई परिवारों का जीवन बांस ने बदल दिया है। इनमें कई ऐसे परिवार हैं जो लॉकडाउन के कारण अपने गांव वापस लौटे हैं। परंपरागत रूप से डोम समुदाय के लोग बांस शिल्प से जुड़े रहे हैं और उन्हीं के द्वारा बांस से निर्मित वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। इन परिवारों से जुड़े हजारों लोग जो रोजगार के लिए अन्यत्र पलायन कर चुके थे कोविड के कारण वापस अपने गांव लौट आए। जीविका ने इनमें अवसर देखा और इनके साथ कार्य आरंभ किया। प्रवासी मजदूर भी अपने गांव में कार्य की उपलब्धता के लिए प्रयासरत थे। जीविका द्वारा बांस पर केन्द्रित दो प्रोडयूर्स ग्रुप की स्थापना की गयी जो, हसनगंज एवं मनिहारी प्रखंड में संचालित है। हसनगंज में डोम समुदाय के 25 प्रवासी श्रमिक और मनिहारी में संथाल (एस.टी) के 40 सदस्य (जिसमें 30 प्रवासी श्रमिक) शामिल हैं। पीजी का खाता खुल चुका हैं और सीएलएफ के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर भी किए जा चुके हैं। सीएलएफों द्वारा पीजी को सलाह और समर्थन की प्रक्रिया आरंभ की जा चुकी है। डोम समुदाय के लोग घरेलू गतिविधियों, शादी, छठ आदि में इस्तेमाल होने वाले बांस के पारम्परीक सामान बनाना आरंभ कर चुके हैं वहीं, संथाल समुदाय द्वारा बांस की कलात्मक और डिजाइनर वस्तुएं बनाने की प्रकिया आरंभ हो चुकी हैं। जीविका द्वारा इन्हें प्रशिक्षण के साथ बाजार की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कार्य प्रारंभ किया जा चुका है।

हरित जीविका हरित बिहार

जलवायु परिवर्तन एवं इसके दुष्प्रभावों को देखते हुए बिहार सरकार ने 'जल जीवन हरियाली' अभियान की घोषणा की थी। इस अभियान के तहत इस वर्ष 'मिशन 2.51 करोड़ पौधारोपण' का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। निर्धारित पौधारोपण के इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीविका को एक करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गय। इसके लिए जीविका ''हरित जीविका–हरित बिहार'' अभियान चला रही है। यह अभियान 5 जून (पर्यावरण दिवस) पर प्रारम्भ हुआ है जो 9 अगस्त (पृथ्वी दिवस) तक चला। इस दौरान जीविका दीदियों द्वारा घर के आंगन, दरवाजे पर कम से कम एक फलदार वृक्ष के पौधे लगाए जा रहे हैं। एक करोड़ पौधों में से तकरीबन 72 लाख पौधे वन विभाग की ओर से उपलब्ध कराए जा रहे हैं जबकि शेष पौधे जीविका दीदियां स्वयं लगाएंगी। जीविका द्वारा एक करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य की पूर्ति हेतु चरणबद्ध प्रकिया अपनाई गई।

अभियान के तहत पौधारोपण करने वाली जीविका दीदियों के नाम और आधार संख्या को मोबाइल एप के माध्यम से संग्रहित किया गया। इसके लिए प्रत्येक पंचायत स्तर पर जीविका कैडर काम कर रहे हैं। एक पंचायत में पौधारोपण करने वाली दीदियों के नाम, आधार संख्या संग्रहित कर उन्हें मोबाइल एप पर दर्ज करने वाले जीविका कैडर को 5 कार्य दिवस का मेहनताना दिया जा रहा है।

प्रवासियों हेतु खुला रोजगार का द्वार

कोरोना संक्रमण के बाद बड़ी संख्या में प्रवासियों की घर वापसी हुई है। इन प्रवासियों के पास रोजगार का अभाव है। विभिन्न माध्यमों द्वारा रोजगार से वंचित प्रवासियों को रोजगार की उपलब्धता के लिए कार्य किया जा रहा है। जीविका, समस्तीपुर भी इस दिशा में अनवरत कार्य कर रही है। जीविका द्वारा प्रशासनिक स्तर से प्रवासियों की सूची प्राप्त कर उसे चिन्हित किया गया। योग्य प्रवासी परिवार को जीविका समूह के साथ जोड़कर उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध करवाने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। इसके अलावे ताजपुर, समस्तीपुर, मोहिउद्दीननगर आदि प्रखंडों में जीविका द्वारा रोजगार शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में बालाजी बायो प्लांटेक कंपनी, शिवशक्ति बायो टेक्नोलॉजी आदि कंपनियों द्वारा लगभग 60 अभ्यर्थियों को रोजगार के लिए चयनित किया गया, जिसमें लगभग 30 प्रवासी मजदूर थे। इसके अलावे ताजपुर, बिथान, पूसा, रोसड़ा आदि प्रखंडों में प्रवासी मजदूरों के साथ बैठक कर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयास आरंभ किये गये। कई प्रवासी द्वारा विभिन्न उद्यमों को आरंभ किया जा चुका है। जीविका, समस्तीपुर द्वारा प्रवासियों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए संकुल संघ स्तर पर प्रवासियों के साथ बैठक आयोजित की जा रही है। स्थानीय स्तर पर 150 से ज्यादा रोजगार प्रदाता कंपनियों के साथ जीविका द्वारा समन्वय स्थापित कर लगभग 1500 को प्रवासियों को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है। प्रवासियों को बीमा से आच्छादित करवाने के साथ ऋण उपलब्ध कर उन्हें स्वरोजगार से भी जोड़ा जा रहा है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- श्री विकाश राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री अभिजीत मुखर्जी – वाई.पी.–के.एम.सी., एस.पी.एम.यू

रूपरेखा
- प्रिया प्रियदर्शी – डिजाईनर